ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

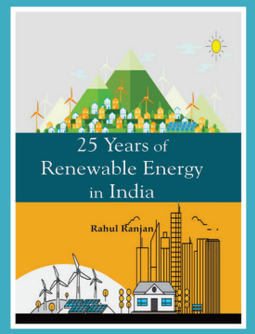

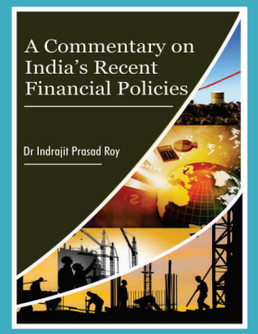

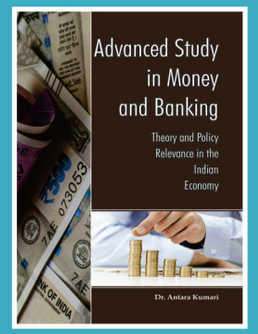

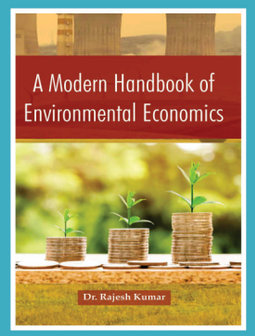

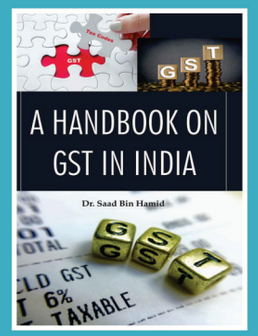

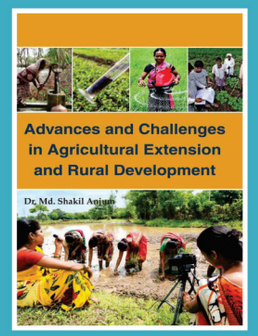

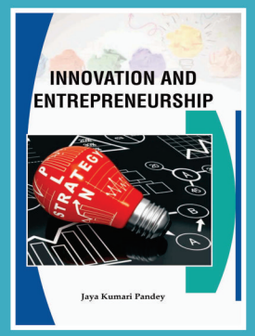

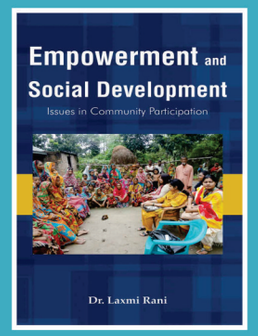

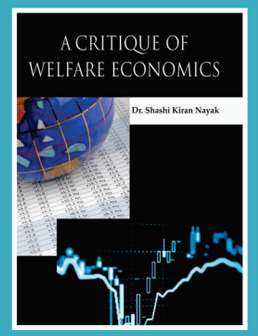

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन

श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर

सहसचिव, महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा मंडल, कोंकण विभागीय मंडल, रत्नागिरी

डॉ० संजीवनी राजेश महाले

सहयोगी प्राध्यापक, शिक्षणशास्त्र विद्याशाखा, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

सारांश

देश हर क्षेत्र में वर्तमान समय में तीव्र परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अध्यापकों को अनेक चुनौतियौं का सामना करना पड़ रहा हैं। नव भारत निर्माण की प्रक्रिया में इन अध्यापकों की अहंम भूमिका और उनकी समस्याओंको जानने की आवश्यकता हैं। ग्रामीण क्षेत्र को शहरी क्षेत्र के समान स्तर पर लाने के लिए वैज्ञानिको, इंजीनियरों, तकनिकी विशेषज्ञों तथा परिवर्तन के अन्य कारकों को सम्मिलित रूप से प्रयास करने की आवश्यकता हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के छात्रोंके लिए समान शिक्षा का प्रावधान होने के बावजूद ग्रामीण सें शहरी क्षेत्र की ओर स्थलांतर दिखाई देता है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हर क्षेत्र के विकास को ध्यान में रखकर योजनाए बनायी जा रहीं है। यह शिक्षा नीति छात्रों को सैद्धांतिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य शिक्षा देने का विचार रखती है। भविष्य के आत्मनिर्भर देश की तैयारी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में दिखाई देती है, क्योंकी इस में महात्मा गांधीजी की नई तालीम का स्वरूप प्रतिबिम्बित हैं। संशोधन कर्ताओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक सक्रियता कार्यक्रम तथा सामाजिक नेतृत्व व संस्थागत क्षमता को मजबूत करने के उद्देश से सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया था। संशोधन कर्ताओं द्वारा अध्यापकों में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और गांधीजी प्रणित नई तालीम के विचार मंथन से छात्रोंके सर्वांगिण विकास को लेकर जागरूकता लाने का यह एक छोटासा प्रयास था। सौ साल पूरे करनेवाले मालवण, जिला सिंधुदुर्ग के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित स्कूल के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के 58 अध्यापकों को स्वयं के, छात्रों के, सहअध्यापकों के, संस्था के और समाज के प्रति उनके सार्वभौम दायित्व से अवगत कराने का प्रयास सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशाला द्वारा किया हैं। संशोधन कर्ताओंद्वारा इस अभ्यास हेतू में मिश्र पद्धति का उपयोग किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रमसे अध्यापकों में जागरूकता निर्माण हो गइ है।

प्रमुख शब्दावली - नयी तालीम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, व्यवसाय शिक्षा, सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रस्तावना

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 2016 में बने मसौदा पर 26 जनवरी 2019 से 31 अक्टूबर 2019 के बीच राज्य सरकारों और केंद्र सरकार के मंत्रालयों के साथ जनता और शिक्षाविदोंसे भी बड़ी परामर्श-प्रक्रिया चली। संशोधन कर्ताओंको राज्यस्तर पर आयोजित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिचर्चा में शामिल होने का मौका प्राप्त हुआ था।

संशोधनकर्ताने महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा मंडल में कार्य के दौरान कोंकण विभाग महाराष्ट्र राज्य में दसवीं और बारवीं के परीक्षा परिणामों में अव्वल होने के बावजूदभी छात्रोंकी संख्या में हर साल निम्न प्रकार लगातार घट का अनुभव किया हैं।

सारणी क्र. 1: दसवी और बारावींके छात्रोंकी संख्यामें प्रकार लगातार घट

अ. क्र.	*साल*	*माध्यमिक शालान्त प्रमाणपत्र परीक्षा (SSC) में प्रविष्ट छात्र संख्या*	*उच्च माध्यमिक प्रमाणपत्र परीक्षा (HSC) में प्रविष्ट छात्र संख्या*
1	मार्च 2018	37,679	33,039
2	मार्च 2019	34,602	31,764
3	मार्च 2020	33,686	30,143

छात्रोंकी शिक्षा को केवल नौकरी की तैय्यारी के रूप में देखे जानेकी अभिभावकों और छात्रोंकी विचारधारासे दोनो संशोधनकर्ता अस्वस्थ थे। कोंकण विभाग के आर्थिक और औद्योगिक जीवन में पिछाडी का प्रमुख कारण यह है कि स्थानीय संसाधनोंका कौशलपूर्वक उपयोग नहीं कीया जाता। स्थानीय भाषा, तकनीक, कौशल, कला एवं कारीगरी को पर्याप्त मात्रा में बढावा न मिलने से यहाँ के लोग प्राय: अपना स्थान छोड़कर अपने समीपवर्ती प्रदेश का ही उपयोग और सेवा करते चलें आ रहें हैं। संशोधन कर्ताने शिक्षा के माध्यम से यहां की नागरिक आवश्यकताओं के अनुसार स्थानीय कृषि और उद्योग को सही दिशा में विकसित किए जाने का महत्त्व रेखांकित किया। संशोधन कर्ताओं ने सौ साल पुरे करनेवाली मालवण, जिला सिंधुदुर्ग स्थित स्कूल के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के 58 अध्यापकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया। संशोधन कर्ताओंने इस कार्यशाला के माध्यम से अध्यापन क्षेत्र में श्रेष्ठतम कार्य करनेवाले स्कूल के प्रत्येक स्तर के अध्यापकों में स्वयं विकास, छात्र विकास, सह अध्यापक विकास, संस्था विकास और समाज विकास में उनका दायित्व जगाने का प्रयास किया। अध्यापकों में छात्रों के शैक्षिक विकास के साथ आर्थिक और सामाजिक विकास का दृष्टिकोण निर्माण करना यह उद्देश्य था।

नयी तालीम की आवश्यकता

भारत की प्राचीन गुरुकुल परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ती को आत्मनिर्भर बनाना था। परकीय शक्तीओं के आक्रमणों से शिक्षा क्षेत्र में बदलाव आयें। समय समय पर बदले हुए सामाजिक-आर्थिक परिस्थितीओं का शिक्षा क्षेत्र पर प्रभाव रहा हैं। अंग्रेजों ने भारत देश में शिक्षा का प्रसार किया। किंतु इस प्रसार का उद्देश व्यक्ती की आत्मनिर्भरता से ज्यादा पूँजीवादी राज्य को बलशाली बनाने में प्रतीत हुआ। ब्रिटिश पूर्व भारत देश में स्थानीय प्रदेशों की संसाधनों से व्यक्ती स्वयं को और समाज को जीवन मे उपयुक्त सामग्री उत्पादित करने में जुड़ा हुआ था। व्यक्ति के साथ समाज का और राष्ट्र का विकास होता था। पर ब्रिटिश सत्ता के परिणाम स्वरूप शिक्षा में साक्षरता के साथ समाजोपयोगी उत्पादन में घट देखी गयी। स्वधीनता लाने हेतू अनेकों प्रतिभावंत व्यक्तीओं ने राष्ट्रीय शिक्षा की नींव डाली। जिस में व्यक्ति विकास, राष्ट्र विकास का अहंम हिस्सा था। महात्मा गांधीजी ने विदेशों में शिक्षा से हुए परिवर्तन को समझकर भारत देश कि जनता की उन्नती के लिए हस्तोद्योग केंद्रित नई तालीम शिक्षा नीति की उपयुक्तता जानी। उन्हों ने देश विदेशों में किए गये शिक्षा के प्रयोगों कों अपने अनुभव चिंतन द्वारा व्यवहार में लाने का प्रयास किया।

नयी तालीम

22, 23 अक्टुबर 1937 में गांधीजी द्वारा वर्धा में नयी तालीम शिक्षा योजना स्पष्ट कि गयी थी। नयी तालीम में किसी उद्योग या दस्तकारी को बीच में रखकर उद्योग शिक्षण के साथ अन्य सभी विषयोंको संबध्द कर उनकी शिक्षा देने का प्रावधान किया गया था। देश का हर बालक सिर्फ किताबी जानकारीही प्राप्त न करें बल्की काम करते हुए सीखें और ज्ञान का संबंध काम से जोड़ सकना सींख सके, तभी ज्ञान का उपयोग होगा और ज्ञान भी स्थायी होगा। इस उद्देश्य से नयी तालीम शिक्षा योजना बनायी गयी थी। नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा, हस्तोद्योग के माध्यम से शिक्षा, मातृभाषा द्वारा शिक्षा, आत्मनिर्भरता, सामाजिक पुनर्निर्माण, अभ्यासक्रम में लचिलापन, आदर्श नागरिक और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण / विकास ये सारी नयी तालीम की विशेषताएँ थी।(दिक्षित, 2020)

नई तालीम विद्यालय सेवाग्राम में एक महत्वपूर्ण पहल थी। यह ग्यारह साल की अवधी का अनेक शैक्षिक गतिविधियों से भरा सुनियोजित कार्यक्रम था। यहाँ पाँच प्रकार की उद्देश्यपूर्ण गतिविधियाँ की जा रही थीं।

1. खाद्य आत्मनिर्भरता (बागवानी, कृषि, खाद्य भंडारण, खाना पकाने और सहायक मामलों और इन सभी) की दिशा में गतिविधियाँ
2. कपड़ा आत्मनिर्भरता गतिविधियाँ (कपास उगाने से लेकर सिलाई रेडीमेड वस्त्र तक)
3. व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता और स्वास्थ्य गतिविधियाँ
4. लोकतांत्रिक समाज में भागीदारी सिखाने की पहल
5. मनोरंजन और अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ (संगीत, पेंटिंग, नाटक, लोक नृत्य, खेल के साथ-साथ सैर, त्यौहार और समारोह) (पानसे, 2007)

आज के दौर में नयी तालीम देने वाली स्कूल

उत्तराखंड के टिहरी जिले में बुनियादी तालीम की तर्ज पर 1977-78 से लोक जीवन विकास भारती नई तालीम विद्यापीठ चला रही है। इस केंद्र पर सौ छात्र कक्षा आठ तक की शिक्षा ग्रहण करते हैं। यहां का पाठ्यक्रम सरकारी स्कूलों जैसा है, पर हर विषय की अलग प्रयोगशाला और किताबों के अध्याय के अनुसार ही पढ़ाई और दैनिक अभ्यास का काम होता है। साथ ही साथ यहां सिलाई-बुनाई, खेती, बागवानी, बिजली उत्पादन, जल संरक्षण, पाक कला आदि की शिक्षा दी जाती है। इससे आत्मनिर्भरता के लिए पढ़ाई के साथ बच्चों कों हाथ से काम करने की आदत होती है। छात्र पढ़ाई के बाद भी गांव में रहना पसंद करते है। जल, जंगल, जमीन को प्राकृतिक उपहार की तरह देखने और इससे चल सकने वाली आजीविका के प्रयोग विद्यापीठ में मौजूद हैं। पास में बह रही मेड नदी से 50 किलोवाट बिजली बनाकर फल प्रसंस्करण, लोहा व लकड़ी की कला, वेल्डिंग आदि कई काम किए जाते हैं। छात्र सुबह सफाई करने से लेकर भोजन बनाना, दैनिक अभ्यास, सांस्कृतिक कार्यक्रम, छात्रावास को देखने आदि का काम सब एक साथ करते हैं। यहां कक्षा आठ तक की पढ़ाई के बाद आगे चलकर छात्र ग्रेजुएट बनते हैं, और इनमें से कोई बेरोजगार नहीं रहता है।(सुरेश भाई, 2018)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा

छात्रों की व्यावसायिक क्षमता में सुधार और बेरोजगारी को खत्म करने के उद्देश्य से स्वाधीनता पश्चात रामकृष्णन समिति (1948), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53), भारतीय शिक्षा आयोग (1966), नयी शिक्षा नीति (1986) में व्यवसाय शिक्षा पर जोर दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा और नयी तालीम का प्रभाव देखने को मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग दो में उच्चतर शिक्षा अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा का नवीन आकल्पन दिया हैं। बारहवी पंचवर्षिय योजना (2012-17) के अनुमान के अनुसार 19-24 आयुवर्ग में आनेवाले भारतीय कार्यबल के 5% से कम प्रतिशत लोगोंने औपचारिक व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त की हैं। विकसित राष्ट्रों की तुलना में यह संख्या काफी कम हैं। यह संख्या भारत में व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार को बढावा देनेकी आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। व्यावसायिक शिक्षा को हमेशा से मुख्य धारा की शिक्षा से कम महत्त्व की शिक्षा माना जाता रहा हैं। क्योंकि व्यावसायिक शिक्षा सिर्फ और सिर्फ उन विद्यार्थियों के लिए जानी जाती रहीं हैं जो मुख्य धारा की शिक्षा के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यावसायिक शिक्षा से जुडी इस सामाजिक पदानुक्रम की स्थितिको दूर करने का प्रयास हुआ हैं। चरण बध्द तरीके से व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को मुख्य धारा की शिक्षा में एकीकृत करके आरंभिक वर्षों में व्यावसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान किये जाऐंगे। जो कि सुचारू रुप से उच्चतर प्राथमिक, माध्यमिक कक्षाओं से होते हुए उच्चतर शिक्षा तक जाऐंगे। कक्षा-6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करने और इसमें इंटर्नशिप (Internship) की व्यवस्था का प्रावधान है। व्यवसायिक शिक्षा को इस तरह एकीकृत करने से प्रत्येक बच्चा कमसे कम एक व्यवसाय से जुडे कौशलों कों सीखें और अन्य कई व्यवसायों के महत्त्व से परिचित होगा। इस शिक्षा नीति में 2025 तक 50% विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष है। जिस से व्यावसायिक क्षमताओं का विकास और अन्य अकादेमिक क्षमताओं का विकास साथ-साथ होगा। व्यावसायिक शिक्षा के फोकस एरिया का चुनाव कौशल अंतर विश्लेषण और स्थानीय अवसरों के आधार पर किया जायेगा। (16.1-16.8 NEP 2020)

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम

नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के क्रियान्वयन के तरीके पर उसकी सफलता निर्भर है। क्रियान्वयन में अन्य घटकों के साथ अध्यापकों की भूमिका अहंम है। इस लिए शिक्षकों से संबंधित सुधार के बारे में नई शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि,

- नेशनल मेंटरिंग प्लान - शिक्षकों का उन्नयन किया जायेगा।
- प्रत्येक स्कूल में शिक्षक छात्रों का अनुपात पीटीआर 30:1 से कम हो तथा सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित बच्चों की अधिकता वाले क्षेत्रों के स्कूलों मे 25:1 से कम हो।
- प्रत्येक शिक्षक से अपेक्षित होगा कि वह स्वयं व्यावसायिक विकास (पेशे से संबंधित आधुनिक विचार, नवाचार और खुद में सुधार करने) के लिए स्वेच्छा से प्रत्येक वर्ष पचास घंटों का सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी) कार्यक्रम में हिस्सा लें।
- संविदा शिक्षक रखने की बजाय नियमित शिक्षक भर्ती करने पर जोर याने कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए शिक्षामित्र, एडहाक, गेस्टटीचर जैसे पद धीरे-धीरे समाप्त होंगे और बेहतर चयन-प्रक्रिया के जरिये स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों में नियमित स्थायी अध्यापक ही नियुक्त होंगे।

तात्विक अधिष्ठान प्राप्त करने के बाद संशोधन कर्ताओंक के मन में निम्न प्रकार के संशोधन प्रश्न उपस्थित हुये।

संशोधन प्रश्न

1. इकीसवीं सदी मे बहु कौशल व्यक्तिओं की आवश्यकता को समझकर अध्यापकों द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जा रहा है क्या?
2. आय सी टी से स्थानीय व्यवसायों में कौन कौन से बदलाव हुए है?
3. व्यवसायों में आते बदलाव का स्कूली शिक्षा में विचार हो रहा है क्या?
4. छांत्रों में स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता के लिए अध्यापकोंद्वारा कौनसे प्रयास किये जाते हैं?
5. छांत्रों में शैक्षिक विकास के साथ आर्थिक और सामाजिक विकास के बारे में अध्यापकों की सोच क्या है?
6. स्कूली अध्यापकों में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदा पर नई तालीम के दृष्टीकोण से चर्चा हो रहे है क्या?
7. नागरिक, समाज और राष्ट्र की आत्मनिर्भरता के लिए व्यवयाय शिक्षा को लेकर अध्यापकोंमें जागरूकता हैं क्या? अगर हैं तो जागरूकता का प्रमाण कितना हैं?
8. अध्यापक नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति से शिक्षा क्षेत्र में आनेवाले बदलाव को छात्रोंतक पहुचाने के लिए सक्षम है क्या?
9. भारत देश की जरूरतों को पूरा करने के लिये नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा शिक्षा प्रणाली में लाए जानेवाले बदलाव को अध्यापक किस तरह से देख रहें हैं?
10. नयी तालीम के संदर्भ मे अध्यापकों को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है क्या?

इन संशोधन प्रश्नों के आधार पर संशोधन कर्ताओं ने निम्न संशोधन समस्या का निश्चयन किया।

संशोधन समस्या

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन

संशोधन उद्देश्य

1. अध्यापक प्रशिक्षण की कार्यनिती सुनिश्चित करना।
2. सामाजिक विकास दृष्टिकोण के बारे में अध्यापकों की सोंच की जानकारी लेना।

3. स्कूली छात्रों कों व्यावसायिक शिक्षा देने के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम कि जरूरत स्पष्ट करना।
4. व्यवसाय शिक्षा के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के क्षेत्र सुनिश्चित करना।

संशोधन कार्यनीति

प्रस्तुत संशोधन के लिए मिश्र पद्धती का उपयोग किया हैं। केंद्राभिमुख समांतर अभियोजन द्वारा प्राप्त संख्यात्मक और गुणात्मक सामग्री का विश्लेषण किया गया है।

प्रशिक्षण कार्यनिती

1. प्रस्तुत कार्यशाला में पूर्व प्राथमिक स्तर के 5, प्राथमिक स्तर के 11, माध्यमिक स्तर के 30 और उच्च माध्यमिक स्तर के 12 ऐसे कूल 58 अध्यापकों का सहभाग रहा। इन में 32 महिला अध्यापक और 26 पुरुष अध्यापक थे।15 आध्यापकोंका एक समूह इस प्रकार 58 अध्यापकों को संशोधन कर्ताओं ने चार समूह में विभाजित किया। प्रत्येक समूह में शामिल अध्यापकों की आयु, शैक्षिक अर्हता और अध्यापन अनुभव भिन्न थे। कार्यशाला में माध्यमिक स्तर पर अध्यापन करनेवाले अध्यापकों की संख्या अधिक थी।
2. संशोधन कर्ताओं द्वारा कार्यशाला के पूर्व अध्यापक विकास से जुड़ी, छात्रों कें सर्वांगीण विकास से जुड़ी 4 से 5 मिनट अवधी के 5 व्हिडीओ क्लिप्स का चयन किया गया। कार्यशाला में पहले 5 मिनट व्हिडीओ क्लिप का प्रदर्शन किया फिर उसी व्हिडीओ क्लिप द्वारा दिए संदेश पर चर्चा कि गयी।
3. अध्यापकों का स्वयं के प्रति दायित्व, छात्रों के प्रति दायित्व, सह अध्यापकों के प्रति दायित्व, संस्था के प्रति दायित्व और समाज के प्रति दायित्व पर चर्चा के लिए 5 प्रश्नों का चयन किया गया। चूने गये प्रत्येक प्रश्नों पर चर्चा के लिए व्यक्तिगत कार्य - 20 मिनट, समुह कार्य - 40 मिनट, समुह का सादरीकरण - 10 मिनट और ट्रेनर द्वारा अभिप्राय - 5 मिनट इस प्रकार की रणनीति तय की गयी।
4. कार्यशाला के शुरूआत में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नयी तालीम के बारे में किसी भी प्रकार का तात्विक ज्ञान नहीं दिया गया था। कार्यशाला के अंतमें संशोधन कर्ताओंद्वारा नयी तालिम के बारह तत्त्वोंको प्रत्येक व्हिडीओ क्लिप के संदेश से और चर्चा के लिए दिए गये प्रश्न से जोड़ा गया।

सामग्री संकलन के साधन

संशोधन कर्ताओं द्वारा सहभागी अध्यापकों का निरीक्षण और सहभागी अध्यापकों द्वारा सादर किये गये आशय का आशय विश्लेषण तकनिकीद्वारा विश्लेषण किया है।

सामग्री विश्लेषण

निरीक्षण

1. पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अध्यापन करने वाले अध्यापकों ने समूह कार्य सहजता पूर्व किया। उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापन करनेवाले अध्यापकों को व्याख्यान की अपेक्षा थी।
2. कार्यशाला के शुरूआत में चारों समूह में कुछही सदस्य सक्रिय सहभाग ले रहें थे, धीरे धीरे समूह के अन्य सदस्योंने भी सादरीकरण मे अच्छा प्रदर्शन किया। अध्यापकों नें उच्चस्तर स्वयं अनुशासन का प्रदर्शन किया, सभी सदस्यों के मत का उचित आदर किया गया।
3. युवा अध्यापकों में प्ब्ब् कौशल और आधुनिक तकनिक का अध्यापन में इस्तेमाल हो रहा हैं।
4. ज्ञान रचनावाद का महत्त्व तो सब अध्यापक जानते हैं परंतु पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए अन्य पद्धति को प्राथमिकता देते हैं।
5. अपने विषय को छोडकर व्यवसायिक शिक्षा के बारे में किसी भी अध्यापक नें नहीं सोचा था। अध्यापकोंद्वारा परीक्षा की तैयारी के लिए छात्रों के केवल मस्तिष्क / बौध्दिक विकास की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।
6. नयी तालीम और नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदा के बारे में सिर्फ 4/5 अध्यापकों को थोडीसी जानकारी थी पर उसका परिपूर्ण ज्ञान उन्हें नहीं था।
7. महिला अध्यापकों की तुलना में पुरुष अध्यापकों ने चर्चा में खुलकर हिस्सा लिया। अधिकतर महिला अध्यापकों नें कार्यशाला के बारे में लिखित रूप में अपना मत प्रकट किया।
8. समाज के प्रति दायित्व के बारे में अध्यापक छात्रों के माध्यम से हरितसेना, पर्यावरण दिन, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान अंतर्गत समुंदर किनारों की सफाई, आपत्ती व्यवस्थापन अंतर्गत उपक्रम, किर्तन जैसी लोककला के माध्यम से समाज प्रबोधन, आरोग्य शिबिर, रक्तदान शिबिर, राष्ट्रीय दिन, अंध निधी, व्यवयाय / करिअर मार्गदर्शन, उद्योजकता के लिए उपक्रमों का आयोजन करते है ऐसा अध्यापकों द्वारा लिखित रूप में मत प्रकट किया गया।
9. एक अध्यापक ने मत प्रकट किया कि छात्रों की संख्या लगातार कम होने से सरप्लस होने का डर और दुसरी स्कूल में तबादले की आशंका को लेकर चिंता से आदर्शोंके बारे में सोचा नहीं जा सकता।
10. एक अध्यापक ने मत प्रकट किया कि नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कुछ नया पाने की अपेक्षा थी मगर आप तो पुराने जमाने की ओर ले गये।
11. संशोधन कर्ताओं से कार्यशालाद्वारा प्रबोधन का प्रयास 58 अध्यापकों में से 2 अध्यापकों ठिक लगा, 9 अध्यापकों को अच्छा लगा, 36 अध्यापकों को बहुत अच्छा लगा और 2 अध्यापकों को उत्कृष्ट लगा।

निष्कर्ष

1. पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापक पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों के मस्तिष्क का याने बौध्दिक विकास करने पर अधिक लक्ष केंद्रित कर रहें हैं।
2. ज्ञान केंद्रित शिक्षा नीति में कार्य अनुभव और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (ैन्ॅ) सिर्फ एक विषय के तहत गुण / श्रेणी के लिए बने उपक्रमों में सीमित हो कर रह गये यह वास्तव है।
3. इकीसवीं सदी में बहु कौशल व्यक्तिओं की आवश्यकता को समझकर अध्यापकों द्वारा छात्रों के सर्वांगीण विकास की गुंजाइश है।
4. अध्यापक नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से शिक्षा क्षेत्र में आनेवाले बदलाव को छात्रोंतक पहुचाने को तैय्यार है किंतु उनमें कयी प्रकार के संभ्रम की स्थिती दिखाई देती है।

अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए सुझाव

आय सी टी से स्थानीय व्यवसायों में तेजी से होनेवाले बदलाव का स्कूली शिक्षा में विचार करके छांत्रों में स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता के लिए अध्यापकोंद्वारा प्रयास कि आवश्यकता है। छांत्रों में शैक्षिक विकास के साथ आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अध्यापक और समाज मिलकर योगदान दे तो नागरिक, समाज और राष्ट्र की आत्मनिर्भरता का सपना सच होगा। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अंतर्गत व्यवसाय शिक्षा से शिक्षा प्रणाली में आनेवाले बदलाव के माध्यम से स्थानिय लोगों की जरूरतों कों पूरा करने के लिये संशोधन कर्ताओंने अध्यापकों को निम्न प्रकार के सेवांतर्गत प्रशिक्षण देने की आवश्यकता जानी है।

1. इकीसवीं सदी में जरूरी कौशल्यों का, स्थानीय व्यवसाय और उन व्यवसायों के लिए आवश्यक कौशल्यों का प्रशिक्षण,
2. आंतरराष्ट्रीय स्तर पर सतत विकास लक्ष्य (ैक्ळ 4) के तहत शिक्षा क्षेत्र में दिए गये लक्ष्यों के बारे में अध्यापकों को प्रशिक्षण,
3. समावेशित शिक्षा के तहत दिव्यांग बच्चों को आत्मनिर्भर करने के दृष्टिकोण से प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को प्रशिक्षण,
4. सातत्यपूर्ण सर्वकष मूल्यमापन के तहत छात्रों का प्रगती कार्ड रखा जाता है। जिस में प्रत्येक कक्षा के अध्यापक छात्रों की क्षमताओं कों खोजकर लिखते है। इस कार्ड के माध्यम से अगली कक्षा के अध्यापक को छात्रों की क्षमताओं और खामियांओं का आकलन होता है। छात्रों को उनकी क्षमता और मर्यादा अनुसार व्यवसाय शिक्षा देने का प्रावधान करने की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण,
5. दसवीं, बारहवीं के बाद छात्र को उसकी रूची और क्षमतानुसार व्यवसाय शिक्षा का चयन करने के बारे में अध्यापकों को व्यवसाय विज्ञ प्रशिक्षण,
6. डी.एड्. और बी.एड्. में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नयी तालीम के बारे में आनेवाले समय में ज्ञानदिया जायेगा किंतु सेवा में कार्यरत अध्यापकों को भी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नयी तालीम के बारे में प्रशिक्षण,
7. उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर स्थानीय संसाधनों को ध्यान में रखकर व्यवसायिक शिक्षा के कौन से अंश की, किन छात्रों को, कैसे शिक्षा देनी चाहिये इसके बारे में प्रशिक्षण

अ.क्र.	*स्थानिय संसाधन*	*विविध व्यवसाय*
1	नारियल	नारियल से स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना, गृह उपयुक्त वस्तूएँ बनाना, नारियल के पौधों की निर्मिती करना
2	आम	आम से स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना, आम के पौधों की निर्मिती करना
3	काजू	काजू से स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना, काजू के पौधों की निर्मिती करना
4	कटहल	कटहल से स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना, कटहल के पौधों की निर्मिती करना
5	ब्लॅक बेरी	ब्लॅक बेरी से स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना, ब्लॅक बेरी के पौधों की निर्मिती करना
6	कोकम	कोकम से स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना, कोकम के पौधों की निर्मिती करना
7	मत्स्यव्यवसाय	स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, प्रोसेस्ड फूड बनाना
8	समुंदर किनारो में पर्यटन व्यवसाय	स्थानिय खाद्यपदार्थ बनाना, पर्यटकों के लिए गाईड, गृह उपयुक्त वस्तू बनाना

समापन

देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों से मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास का ग्राम स्वराज की संकल्पना, आर्थिक विकेन्द्रीकरण और स्वावलंबन के मूल्योंपर सकारात्मक प्रभाव दिखेगा। आज पुनः कोरोना संकट ने वैश्विक स्तर पर 'आत्मनिर्भरता' की संकल्पना को विमर्श के केन्द्र में लाकर खडा कर दिया है। ऐसे में, भारत केन्द्रित नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में स्कूली स्तर पर छठी कक्षा से व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक सार्थक पहल है। इसी व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अध्यापकों में जागरूकता लाने का और अध्यापकों को उनकी जरूरतों के मुताबिक सेवांतर्गत प्रशिक्षण की अनिवार्यता को उजागर करने का संशोधन कर्ताओं का हेतू सफल रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शिवदत्त, (2006), नयी तालीम (विचार, दर्शन, योजना एवं पाठ्यक्रम), वर्धा, नयी तालीम समिती, आश्रम सेवाग्राम
2. शिवदत्त, (2009), नयी तालीम (प्रयोग, प्रसार एवं परिणाम), वर्धा गांधी सेवा संघ, सेवाग्राम
3. पानसे र., (2007), नयी तालीम, गांधी प्रणित शिक्षणविषयक प्रयोगांचा इतिहास, डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे.
4. पंडित बं. बि., महाले सं. रा.,(2015), संशोधन गुणात्मक आणि मिश्र पद्धती, युनिक पब्लिकेशन औरंगाबाद
5. सुरेश भा., (2018), अमर उजाला ई-पेपर
6. सेक्रेटरी, कोंकण विभागीय मंडल, रत्नागिरी द्वारा प्रकाशित मार्च 2018, मार्च 2019, मार्च 2020 एस.एस.सी और एच.एस.सी के परीक्षा परिणाम
7. https://echetana.com/wp-content/uploads/2020/10/3.-A-E-Dr-Mahesh-Narayan-Dixit.pdf